मोहनदास नैमिशराय के कथा-साहित्य में दलित चेतना

संपर्क-सूत्र: रश्मिरानी स्वाईं,
शोधार्थी (हिन्दी विभाग),
हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद – 500046.

हमारे समाज में सदियों से दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार होता रहा है । आजादी के बाद उन्हें यह आशा थी कि अब उनके अरमान पूरे होंगे । समाज में उनकी स्थिति में सुधार आएगा । भारत स्वतंत्र हुआ और लोग अपनी स्वाधीनता की खुशी मनाने लगे । लेकिन दलितों को कुछ प्राप्त नहीं हुआ । न उनके अरमान पूरे हुए, न उनको स्वाधीनता मिली । बल्कि समाज में फैली चातुर्वर्ण्य की परंपरा में उनकी स्थिति और बिगड़ गयी । सनातन धर्म की इस जाति व्यवस्था ने दलितों की स्वाभाविक स्वतंत्रता को ही छीन लिया था। सामाजिक, धार्मिक आदि अनेक बंधनों के कारण दलितों का मनुष्य के रूप में जीना मुश्किल हो गया । दलितों की इस अमानवीय स्थिति को समाज के सामने लाकर उनमें सुधार लाने का श्रेय महात्मा ज्योतिबा फुले, पेरियार, राजा ढ़ाले और अंबेडकर आदि को दिया जाता है । इन्होंने दलितों को समाज में एक सम्मानपूर्ण जीवन जीने के लिए अनेक प्रयास किए । फुले ने हिन्दू समाज की उस ब्राह्मणवादी व्यवस्था और शास्त्रों का विरोध किया जो दलितों को समाज में सम्मानजनक स्थिति से वंचित करती थी । फुले को यह विश्वास था कि शिक्षित होकर ही दलित अपनी अस्मिता को पहचान सकेगा । इसलिए उन्होंने दलित-पिछड़ों के लिए स्कूल खोला जो इन वर्गों के लिए देश का प्रथम विद्यालय था। फुले की इस परंपरा को अंबेडकर ने आगे बढ़ाया । अंबेडकर ने दलित मुक्ति के लिए कठोर संघर्ष किया ।उन्होंने दलितों को गुलामी से जगाया और कहा "अन्याय तब तक दूर नहीं होगा जब तक उसे सहन करने वाला खुद-ब-खुद उठ कर खड़ा न हो, जब तक गुलामी से मुक्त होने की भावना प्रज्वलित नहीं होती, वह गुलामी के विरुद्ध लड़ने, मरने मिटने को तैयार नहीं होगा, गुलामी जानेवाली नहीं, गुलाम को यह अहसास करा दो कि वह गुलाम है, वह क्रांति कर देगा।"[1] उनके इस संदेश से दलितों में चेतना आई । अंबेडकर ने दलितों को उनकी वास्तविक स्थिति से परिचित करवाया और उन्हें शिक्षित बनने तथा संगठित होकर अपने अधिकार के लिए संघर्ष करने की शिक्षा दी । पूरा दलित समाज ने अंबेडकर के दिखाई गए राह पर चलकर अपने समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया । अंबेडकर के प्रयासों से दलितों में चेतना जागृत हुई ।अतः दलित चेतना का सीधा संबंध अंबेडकर दर्शन से है । डॉ. गंगाधर पानतावणे के शब्दों में "दलित साहित्य की प्रेरणा न मार्क्सवाद है न हिंदूवाद, न नीग्रो साहित्य है । दलित साहित्य की प्रेरणा केवल अंबेडकरवाद है ।"[2]

जब दलितों को ज्ञान हो गया कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, उनका शोषण हो रहा है तब वे उसके खिलाफ विद्रोह करने लगे हैं । उनका इस विद्रोह का स्वर हमें नैमिशराय के कथा साहित्य में देखने को मिलता है ।

1-प्राचीन प्रथा-परंपराओं का विरोध : हिन्दू धर्म ग्रन्थों में दलितों के लिए ऐसे नीति नियमों का उल्लेख किया गया जिससे समाज में दलितों की स्थिति हेय बनती चली आयी ।धर्मग्रंथों में वर्णित इसी प्रथा-

परम्पराओं का सहारा लेकर सवर्णों ने दलितों का सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक आदि कई रूपों से शोषण किया । लेकिन आज दलित समाज को उन धर्मग्रंथों में लिखित नियम,रीति-रिवाज मान्य नहीं हैं । इस सब नीति नियमों के खिलाफ अब वह विद्रोह करने लगे हैं । 'रीत' कहानी का बुलाकी एक ऐसी ही विद्रोही पात्र है । बुलाकी सवर्णों द्वारा निर्मित रीति रिवाजों का सम्पूर्ण विनाश कर देना चाहता है जिसके कारण दलितों का आत्म गौरव वंचित होता है । उसके गाँव में जब भी कोई नई दुल्हन आती थी तो उसको शादी की पहली रात जमींदार के साथ रहना पड़ता था ।जिसे रीत मानकर दलित लोग निभाने को मजबूर थे।बुलाकी की पत्नी को भी यह रीत निभानी पड़ती है । इसी परंपरा को तोड़ने के लिए बुलाकी अपने आप को तैयार करता है । एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर, चेहरे पर दाढ़ी-मूँछ लगा कर, कंधे पर बन्धूक रख कर गाँव में प्रवेश करता है । घोड़े पर चढ़ना, बन्दूक पकड़ना, चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ रखना जो कि दलितों के लिए निषेध था ।वह उन सारे निषेधों को तोड़कर आता है और जमींदार की हवेली को आग लगा कर भस्म कर देता है । जिसे जमींदार सहित उसका पूरा परिवार खत्म हो जाता है । वह अपनी पत्नी से बोलता है "फूलो अब कोई जमींदार गाँव की किसी औरत की इज्जत को खराब नहीं करेगा । मैंने उनका वंश सदा-सदा के लिए खतम कर दिया है ।"[3]यहाँ बुलाकी प्रतिरोध का प्रतीक है । वह दलितों के खिलाफ हो रहे अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध प्रतिशोध लेने का संदेश देता है ।

अब दलित यह मान चुका है कि वर्ण पर आधारित व्यवस्था उसे गुलामी से मुक्त होने नहीं देगी । इसलिए वह व्यवस्था द्वारा बनायी हुई हर एक प्रथा, परंपरा का खुलकर विरोध करता है । 'कर्ज' कहानी में अशोक के पिता की मृत्यु हो जाने पर गाँव के सवर्ण लोग उसे महाजन से कर्ज लेकर पूरी बिरादरी को मृत्यु भोज देने के लिए बाध्य करते हैं । लेकिन अशोक इसका विरोध करता है । वह गाँव के महाजन से कहता है " तुम लोग इन भोले-भालों को धर्म का सबक पढ़ा कर कर्ज लेने के लिए मजबूर करते हो। उन्हें तैंतीस करोड़ देवताओं के चक्कर में डालकर झूठी धार्मिकता के बहाने उनका शोषण करते हो ।"[4] यहाँ लेखक अशोक के माध्यम से दलितों में उत्पन्न जागरूकता को दर्शाते हैं ।

दलित वर्ग में चेतना का यह सिलसिला 'मुक्ति पर्व' उपन्यास में भी दिखाई देता है । अनपढ़ होते हुए भी बंसी दलितों के अधिकार, समानता और स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करता है । वह दलित समाज के आत्मबल को बढ़ाना चाहता है, उनमें स्वाभिमान पैदा करना चाहता है । जिसके लिए वह खुद नवाब अलीवर्दी खाँ की गुलामी करना छोड़ देता है ।जब नवाब उसे अपने बेटे को उनकी हवेली में नौकरी देने के लिए कहते हैं तो वह जवाब देता है "नवाब साहब, न अब मैं किसी की गुलामी करूँगा और न मेरा बच्चा । मुझे गुलाम बने रहने की आदत नहीं नवाब साहब। वैसे भी देश अब आजाद हो गया है । अब न कोई किसी का गुलाम है और न कोई किसी का मालिक । सब बरब्बर हैं ।"[5]बंसी गुलामी का विरोध करते हुए अपने समाज के उत्थान के लिए संकल्प लेता है । वह सवर्णों द्वारा निर्मित धार्मिक परंपराओं का भी विरोध करता है । दलितों का नामकरण करने का अधिकार सिर्फ ब्राह्मणों को है । लेकिन बंसी इसका विरोध करते हुए अपने बच्चे का नाम कारण स्वयं करता है ।"बंसी ने बच्चे का नाम रखा था सुनीत। पंडित केशव प्रसाद ने जाते जाते सुना था बंसी कह रहा था, आज के बाद इस बस्ती में किसी पंडित की जरूरत नहीं पड़ेगी ।"[6]

पहले दलित समाज के लोग धर्मग्रंथ द्वारा निर्धारित पेशों को अपनाने के लिए विवश थे। मरे हुए पशुओं का चमड़ा निकालने, सवर्णों के कपड़े धुलाई करने, मल-मूत्र की सफाई आदि काम करने को विवश थे ।लेकिन अब परिवर्तन की जो भावना उनमें पैदा हुई है वह उसे गंदे काम करने से रोकती है । इसलिए 'आवाज़ें' कहानी में दलित बस्ती के लोग गंदे काम करने से साफ इनकार कर देते हैं । इतवारी को जब गाँव का ठाकुर अपना कारिंदा भेजकर काम करने के लिए बुलवाता है तो वह साफ इनकार करते हुए कहता है "ठाकुर पुराने दिन लद गए। अब तुम्हारी ठकुराहट न चलेगी । जिनको तुम अब तक छोटा समझते रहे, वे अब छोटे नहीं। आजाद भारत में सब बराबर हैं ।"[7]गाँव के जमींदार को काम करने से स्पष्ट रूप से इनकार करने की जो हिम्मत इतवारी में दिखाई देती है उससे मालूम होता है कि अब दलित भी अपनी अस्मिता के बारे में सोचने लगे हैं ।'अपना गाँव' कहानी का सम्पत भी सदियों से उत्पीड़ित, अवहेलित, शोषित दलित वर्गों को जागृत करता है ।वह दलितों के सामने आम्बेडकर के दर्शन को रखते हुए उनको संगठित होकर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है । अंततः दलित बस्ती के लोग उससे प्रेरित होकर अन्याय का विरोध करते हुए कहते हैं "बहुत सह लिए ठाकुरों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी जुल्म। अब और न सहेंगे । सयुंक्त आह्वान था उनका ।"[8]यहाँ लेखक ने सम्पत के माध्यम से दलितों के स्वाभिमान को जगाने का प्रयास किया है ।

2- शिक्षा के प्रति चेतना : इस असमानतावादी समाज ने लंबे समय से दलितों को ज्ञान से दूर रखा । जब कभी दलितों ने शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश की तब उन्हें रास्ते से हटाने का पूरा बंदोबस्त सवर्णों ने किया । उन्हें अपमानित, प्रताड़ित करके शिक्षा से दूर रहने के लिए बाध्य किया गया । लेकिन दलित महापुरुषों के प्रयासों से दलित वर्ग आज शिक्षा के महत्व को समझ पाया है । अब वह शिक्षित बनकर अपने समाज के लिए लड़ना चाहता है । 'आधा सेर घी' कहानी में बलवन्ता गरीबी को झेलते हुए भी अपने बेटे को शिक्षित बनाना चाहता है । वह अपने बेटे धन्नालाल को पढ़ाने के लिए अनेक संघर्ष करता है । गाँव का जमींदार चाहता है कि उसका बेटा हमेशा गवाँर ही रहे । उसने जब बलवन्ता को अपने बेटे की पढ़ाई के लिए घर और खेत गिरवी रखने के लिए मना करता है तो वह कहता है "साहूकार जी, तुम्हारा काम है सूद लेना और मेरा काम है बेट्टे को डिपटी कलक्टर बनाना । मैं भुक्खा रै लूँगा । मजदूरी कर लूँगा, लेकिन बेट्टे को डिपटी कलक्टर जरूर बनाऊँगा ।"[9]आज दलित समाज के लोग शिक्षा के प्रति जागरूक हो गए हैं । वे अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए भरसक प्रयास करते हैं । 'मुक्ति पर्व' में बंसी समाज के सारी ताकतों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने पुत्र सुनीत को शिक्षित बनाना चाहता है । उसे अब यह मालूम हो चुका है कि शिक्षा ही एक मात्र रास्ता है जिसे दलित सारे अन्याय, अत्याचार और गुलामी से मुक्त हो सकता है । बंसी चाहता है कि उसका बेटा शिक्षित बनकर उसके और उसके पूरे समाज में परिवर्तन लाये । वह अपने बेटे को शिक्षा के महत्त्व कोसमझाते हुए कहता है "बेटा, विद्या तो ज्योति के समान है । एक ज्योति से हजारों ज्योति जल सकती हैं।"[10]सदियों से दलितों के साथ अन्याय हुआ है। पर बंशी नहीं चाहता कि उसके बेटे के साथ भी वही अन्याय और अत्याचार हो ।इसलिए वह उसे शिक्षित बनाकर निडर बनाना चाहता है । वह अपने पुत्र सुनीत को शिक्षा की आवश्यकता को बताता है साथ में उसे अंबेडकरवादी विचारों से प्रभावित भी करता है । सुनीत भी अपने पिता से प्रभावित होता है, शिक्षा के महत्त्व और अंबेडकारवादी विचारों को समझता है ।

वह कड़ी मेहनत कर पढ़ाई करता है।"सच बात तो यह थी कि सुनीत मेहनत इसलिए ही कर रहा था कि उनकी जाति का सिर ऊँचा हो, उनके मान-सम्मान को जो आघात लगे हैं, उनसे उबर कर वे आगे आएँ।"[11] सुनीत खुद शिक्षित बन एक अध्यापक बनना चाहता है । जिसे वह समाज में पारंपरिक व्यवस्था को बदलकर अपने दलित बस्ती के बच्चों को शिक्षित कर उनमें चेतना ला सके।

आज दलित समाज के लोग पढ़-लिख कर शिक्षित बन रहे हैं । जिसके कारण वे गुलामी के कारण को समझने में सफल हो रहे हैं । शिक्षा के कारण अब दलितों में सामाजिक, आर्थिक चेतना के साथ-साथ राजनैतिक चेतना भी आ गयी है ।दलितों में शिक्षा के प्रसार का एक फायदा यह हुआ कि अब वे अपने अधिकार के प्रति, अपने मान-सम्मान के प्रति सचेत हो गए हैं ।'जगीरा' कहानी में जगीरा शिक्षा प्राप्त कर अपने आपको सक्षम बनाता है । अब वह अपने राजनैतिक अधिकार को समझ गया है । जिसे पाने के लिए वह संघर्ष करता है ।अपने दलित भाइयों को भी उनके अधिकार के प्रति सजग कराता है । दलितों की अधिकार भावना को उजागर करने के लिए वह कहता है "सुनों भाइयों हम कोरी राजनीति करने यहाँ नहीं आए । हमने इनके दरवाजे पर दस्तक दी है, इन्हें गुलामी की नींद से जगाने के लिए । इनमें चेतना लाने के लिए । इन्हें यह बतलाने के लिए कि ये भी दूसरों की तरह आदमी हैं।"[12]इसी शिक्षा के कारण आज दलित भी अन्य लोगों की तरह सम्मान पूर्वक जी रहे हैं । 'जख्म हमारे' उपन्यास में राजू पढ़ा-लिखा है इसलिए वह सवर्णों की अपमानपूर्वक बात को सहन नहीं कर पाता है । थाने में इन्सपेक्टर जब दलितों को असामाजिक लोग कहकर संबोधित करता है तो राजू परमार उसका मुँह तोड़ जवाब देता है । वह कहता है "इन्सपेक्टर साहब यहाँ जितने भी लोग आए हैं, वे सब पढ़े-लिखे हैं और लोकतांत्रिक तरीके से अपनी बात कहने में विश्वास रखते हैं।"[13]राजू परमार दलित समाज में परिवर्तन लाना चाहता है । अब राजू परमार जैसे क्रांतिकारी व्यक्ति दलित समाज में पैदा हो रहे हैं और बाबा साहेब अंबेडकर को पढ़ कर अपने समाज के बारे में सोचने लगे हैं ।

3- स्त्री चेतना : नैमिशराय अपने कथा साहित्य में दलित महिलाओं में जागृति और चेतना को भी दर्शाते हैं। गाँव की दलित महिलाएँ अब देह शोषण के खिलाफ खड़ी हो रही हैं । यदि कोई उनकी इज्जत पर हाथ डालने की कोशिश करता है या उनको गलियाँ देता है तो वे कुचेष्टा करने वालों को मारने-पीटने को तैयार हो जाती हैं।'आवाज़ें' कहानी में जब ठाकुर का कारिंदा दलित महिलाओं को गंदी गालियाँ देते हुए काम पर बुलाता है तो सारी दलित महिलाएँ इकट्ठी होकर उसकी पिटाई करती हैं, जिसका वर्णन लेखक ऐसे करते हैं "वे तो पहले से जली-फूँकी बैठी थी । सारी मेहतरनियाँ एक हो गयीं ।उन्होंने मुँह से बात न की, झाड़ू से की। ऐसे समय पर झाड़ू ही उनका हथियार होता है । ठाकुर के मुँह लगे कारिंदे को शोर मचाकर सात-आठ ने घेर लिया । जिसके जी में जितनी आई उतनी ही झाड़ू लगाई । कारिंदे की लंबी-लंबी मूँछे भी जो हाथों से उखाड़ दी गईं ।"[14]दलित स्त्री अब अपने प्रति हुए अन्याय का विरोध करती है । पहले जैसे वह रोती, सिसकती या उनके साथ हुए अत्याचार को भाग्य की नियति मानकर चुप नहीं रहती है । अब वह सवाल करना,विरोध करना सीख गयी है । 'जख्म हमारे' उपन्यास में दलित स्त्री रुक्मणी झाड़ू लगाने का काम करती है । एक दिन झाड़ू लगाते समय गाँव का पटेल उसे अपमानित करते हुए गंदा उठाने को कहता है तो रुक्मणी चुप नहीं बैठती है । वह कहती है "तुझे तमीज है, औरतों से कैसे बात करनी चाहिए। क्या हम लोगों

की इज्जत नहीं है ? बतला मुझे । सारी इज्जत कराने का ठेका तुम्हीं लोगों ने लिया हुआ है ।"[15] अब दलित नारी भी अपनी अस्मिता को पहचान गयी है । वे अपने आत्म सम्मान के लिए संघर्ष करना सीख गयी हैं ।'उसके जख्म' कहानी की कमला भी अपने ऊपर हुए अत्याचार का विरोध करती है । वह जमींदार के खिलाफ मुकदमा लड़ती है । यह एक स्त्री द्वारा किया गया क्रांतिकारी कदम है ।कमला अपनी राय देती है कि "जुल्म और अन्याय के खिलाफ तो लड़ना ही है । चाहे जीत हो या हार ।"[16]भले ही जमींदार की खरीदी हुई सम्पूर्ण व्यवस्था उस लड़की का पक्ष न ले लेकिन समाज का दबाव और जमींदार की धमकियों उसे न्याय पाने के लिए न्यायालय जाने से रोक नहीं पाती ।

सदियों से सवर्ण समाज के लोगों ने दलितों को अपना गुलाम मानते हुए उनके साथ मनमाने ढंग से व्यवहार किया । लेकिन अब दलित उनकी मनमानी चलने नहीं देंगे । अब दलित चेतना समाज में पारंपरिक व्यवस्था को आमूलचूल परिवर्तन करने की दिशा में अग्रसर है । आज दलित सिर्फ अपनी पीड़ाओं को अभिव्यक्त नहीं करता बल्कि समाज की अमानवीय व्यवस्था का मुखर विरोध भी कर रहा है । उस व्यवस्था का विरोध जिसने उसे सवर्णों का गुलाम बनाकर नारकीय जीवन जीने के लिए विवश किया ।

आधार ग्रंथ सुची

[1]हरीनारायण ठाकुर, भारत में पिछड़ा वर्ग आंदोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, पृ.सं- 106
[2]ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र,पृ.सं-30
[3]मोहनदास नैमिशराय, आवाज़ें, पृ.सं- 123
[4]मोहनदास नैमिशराय, हमारा जबाव, पृ.सं- 18
[5]मोहनदास नैमिशराय, मुक्ति पर्व, पृ.सं- 38
[6]वही, पृ.सं- 32
[7]मोहनदास नैमिशराय, आवाज़ें, पृ.सं- 21
[8]मोहनदास नैमिशराय, आवाज़ें, पृ.सं- 43
[9]मोहनदास नैमिशराय, हमारा जबाव, पृ.सं- 76
[10]मोहनदास नैमिशराय, मुक्ति पर्व, पृ.सं- 56
[11]मोहनदास नैमिशराय, मुक्ति पर्व, पृ.सं- 71
[12]मोहनदास नैमिशराय, हमारा जबाव, पृ.सं- 30
[13]मोहनदास नैमिशराय, जख्म हमारे, पृ.सं- 115
[14]मोहनदास नैमिशराय, आवाज़ें, पृ.सं- 20
[15]मोहनदास नैमिशराय, जख्म हमारे, पृ.सं- 79
[16]मोहनदास नैमिशराय, आवाज़ें, पृ.सं- 132